'सांस्कृतिक व राष्ट्रीय चिन्तक - कवि कन्हैयालाल जी सेठिया'

श्रीमति मंजू सारस्वत,
शोधार्थी (शोध निर्देशक: डॉ. विमलेश शर्मा),
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यायल अजमेर,
+91-9460892305,
yagyasar1958@gmail.com,

सारांश (Abstract)

यह शोध पत्र राजस्थान के मर्धन्य कवि पद्मश्री कन्हैयालाल जी सेठिया के काव्य में निहित सांस्कृतिक- राष्ट्रीय चेतना पर केन्द्रित है। कन्हैयालाल जी सेठिया का लेखन राजस्थान क्षेत्र तक ही सीमित नहीं वरन पूरे देश पर अपनी अन्तदृष्टिी रखते थे। जब भारत पर अंग्रेजो का अधिपत्य था तथा भारत की जनता को अत्याचारो को सहना पड़ा, तब उनकी लेखनी से अग्निवाणी जैसे काव्य संग्रह स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए जनमानुष की प्रेरणा का स्त्रोत बने। आज भी इनके काव्य अपनी सार्थकता सिद्ध करते हैं। उन्हे अपनी मातृभाषा राजस्थानी से बहुत लगाव था और इसकी (राजस्थानी भाषा) की मान्यता के लिए वे अथक परिश्रम करते रहे । इसी उद्देश्य से उन्होंने "मायड रो हेलो" नामक राजस्थानी भाषा में पुस्तक भी प्रकाशित की। इस शोध पत्र में, कवि कन्हैया लाल जी सेठिया द्वारा रचित काव्य के राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चिंतन के वृहद रूप को प्रदर्शित किया गया है। जहां कवि द्वारा हर तत्कालिक राष्ट्रीय और सामाजिक उथल-पुथल को सरल शब्दों के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाया, जो उनकी एक राष्ट्रीय कवि की छवि को पूर्ण करती है।

बीज शब्द (Keywords)

कन्हैयालाल सेठिया, सांस्कृतिक चिन्तन, राष्ट्रीय चिन्तन

भूमिका (Introduction)

"कवि" भावों को शाब्दिक अभिव्यक्ति देता है, जोकि सामान्य शब्दों में एक गहरे यथार्थ को प्रतिबिंबित करता है। कवि अपनी कल्पनाशीलता से अनंत तक जा सकता है और इसीलिए कहा जाता है "जहां न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि"। कवि सामयिक परिस्थितियो, राष्ट्रीय, सामाजिक और व्यवहारिक स्थितियों को जनमानस तक पहुंचाने का कठिन कार्य अपने काव्य के द्वारा करता है। 19वीं शताब्दी के शुरुआत में कई सारे प्रसिद्ध कवि हुए जैसे कि महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, रामधारी सिंह दिनकर, कन्हैयालाल सेठिया इत्यादि। इन्हीं कवियों ने अपने काव्य के द्वारा आमजन में सामाजिक और राष्ट्रीय भावों का अपनी कविताओं के माध्यम से संचरण किया। इन्हीं के ओजपूर्ण काव्य आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम में एक आधार बनी। ऐसे में भारत का पश्चिमी रेगिस्तानी क्षेत्र कैसे अछूता रहता? और राजस्थानी भाषा में राष्ट्रीय भावों को जनमानस तक पहुंचाने का बीड़ा कवि कन्हैयालाल सेठिया, विजयदान देथा, जुगल किशोर जैथलिया आदि ने उठाया।

कन्हैयालाल सेठिया जी सम्भवत दुनिया के उन गिने चुने महान कवियो में से है। जिनका काव्य सहज भावो, आकांक्षाओ और कल्पनाओ की अप्रासगिक अभिव्यक्ति मात्र बनने के बजाय एक समूची संस्कृति का प्रतिबिम्ब बन गया। इस मायने में वे राजस्थानी भाषा और साहित्य के पितृ-पुरूष होने के साथ साथ हमारी भारतीय संस्कृति के संवाहक व दूत है। उनकी रचानाएं सफल काव्य के तत्वो से परिपूर्ण होने के साथ- साथ राजस्थान की विशिष्ट सामाजिकता, परम्पराओ एवं गौरवपूर्ण सांस्कृतिक - ऐतिहासिक विरासत और साहित्यि का भण्डार है। "धरती

धोराँ री" व "पाथल पीथल" तो शाश्वत व सनातन है। उनका अमर गीत "धरती धोराँ री" एक रचना किसी धरती का किसी अचंल का किसी भूभाग का पर्याय बन जाये, यह उनके काव्य सृजन का अद्भूत अनुपम उदाहरण है। इस एक रचना ने सेठिया जी को किदवन्ती पुरूष बना दिया।

धरती धोराँ री, आ तो सुरगां नै सरमावै,
ई पर देव रमण नै आवै,ई रो जस नर नारी गावै, धरती धोराँ री। (1)

यह सर्वविहित सिद्धान्त है, कि अच्छा साहित्य समाज का दर्पण होता है। तत्कालीन परिस्थितियो व स्थितियो के अनुरूप ही सेठिया जी अपनी कविताओ को गति दे रहे थे। समसामयिक समस्याओ के सृजन के साथ साथ वे पथ प्रदर्शन का कार्य भी कविताओ के माध्यम से कर रहे थे। 1942 में देशभक्ति का आव्हान करने वाली हिन्दी की पुस्तक अग्निवीणा निकाली। जो जो मात्र एक काव्य संकलन ही नहीं, साक्षात अग्निवीणा ही थी। देशी रियासतो के दमघोटू वातावरण में जहां सामान्य नागरिक बात भी करता तो देश द्रोह माना जाता था। उस समय अग्निवीणा जैसी रचना प्रस्तुत कर आजादी की मांग बुलन्द करने का साहसिक कार्य किया जो उनकी राष्ट्रभक्ति का पर्याय बना।

आज हमारी रग-रग में है, महाप्रलय बिजली दौड़ी,
अब न अधिक अन्याय सहेंगे, हमने युग की रासें मोडी, (2)

भारत अंग्रेजो की गुलामी से आक्रान्त था। 'अग्निवीणा' मे स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए निरन्तर जन-जन को सम्मिलित होने का आव्हान किया -

रक्त उबलता रहे रगो में, जीवन की परवाह न हो,
बढे चलो विद्रोही मेरे, और दूसरी चाह न हो। (3)

यह कविता हजारो कंठो मे प्रतिध्वनित होती रही। हतोत्साहित जनता इस कविता को पढ़कर द्विगुणित उत्साह से स्वतन्त्रता के संग्राम में जुझने के लिए फिर से संकल्पित हुई। युग संघर्ष से लोहा लेकर कवि ने अपने को सशक्त सर्जक सिद्ध किया है। जीवनगत सत्य के निदर्शनाथ उन्होने ऐसी काव्य कृतियो का प्रणयन किया जिनमे संघर्षरत नवोदित राष्ट्रीय संघर्षो आकांक्षाओ की अभिव्यक्ति मिली। जन संवेदना युग सत्य की अभिव्यक्ति उनकी काव्य कृतियो का प्राण है। अपनी मातृभूमि पर सर्वस्व न्योछावर करने के लिए उन्होने नवयुवको से अपनी लेखनी से जो जोश भर दिया, वह अतुल्य है -

गूंज उठे मारू के स्वर से, मारवाड़ की गली गली,
तुम दहाड़ कर कहो, श्वान सम कब सिहों की कौम पली। (4)

देश सेवा से बड़ा कोई धर्म व कर्म नहीं है, अपनी मातृभूमि पर न्यौछावर होना व तन मन धन से समर्पित होना सर्वोत्कृष्ट मानवीय गुण है। सेठिया जी भारत माता को गुलामी से स्वतन्त्र करने के लिए निरन्तर अपनी कविताओ से जोश उर्जा का संचार करते रहे। 1942 के आन्दोलन का जब ब्रिटिश शासको ने क्रूरतापूर्वक दमन किया। तब सेठिया जी ने पाथल - पीथल जैसी ओजस्वी रचना लिखी। जिसमे महाराणा प्रताप द्वारा विदेशी राजा अकबर के विरूद्ध अथक लड़ने का संकल्प दोहराया। -

राखो थें मूंछयां ऐठ्योंडी, लोही री नदी कहा घूंला,
हूँ अथक लंडूआं अकबर स्यूं, उजड़यो मेवाड बसा घूँला। (5)

म्हे आज सुणी है, नाहरियो, स्याला रै सागै सोवेलो,

म्हे आज सुणी है सूरजड़ो, बादल री ओटाँ खोवेलो। (6)

इस कविता ने लोगो में दुगुने उत्साह से स्वतन्त्रता संग्राम में जूझने का संकल्प पुनः जगाया। जागीरदारी अत्याचारो के विरूद्ध 1945 ई. में लिखी उनकी कविता 'कुण जमीन रो धणी' किसानो के संघर्ष का गलहार बन गई। इन कविताओ को लिखने का खतरा श्री सेठिया जी ने साहसपूर्वक झेला। 'अग्निवीणा' पर बीकानेर राज्य की ओर से उन पर देशद्रोह का मुकदमा चला, जो भारत की आजादी के साथ ही खत्म हुआ।

चीनी आक्रमण के समय आपने 'चीन को ललकार' एवं 'रक्त दो' नामक दो लघु पुस्तिकाए भी लिखी जो सरकारी व गैर सरकारी स्तर पर व्यापक प्रचारित हुई। जब देवात्मा हिमालय पर चीनी दरिन्दो का हमला हुआ तो कवि की युग चेतना पुनः सजग हो उठी। 'जादूगर माओ', 'आज हिमालय बोला' आदि कविताए राष्ट्रीय संकट के समय कर्तव्य की पुकार को प्रति ध्वनित करती सी प्रतीत हुई।

तुम उठो, तुम्हारे कंठो से, फिर रणरागी उद्घोष उठे,

हिमगिरि की ध्वनित गुहाओं से फिर पांचजन्य का घोष उठे। (7)

महाकवि सेठिया जी के कृतित्व में मात्र भावे की अभिव्यक्ति ही नहीं अपितु सचेत कृतित्व के भाव भी थे जिनमे वैचारिक दृढता, प्रबुद्धता व सत्य की बेबाकी पर कहते नजर आते। 'आज हिमालय बोला' का कविता संग्रह तो मानो उनका अन्तर्मन चीन के धोखे से दुखित हो चित्कार उठा-

आज हिमायल बोला , हंसो वाला मानसरोवर,

हिम मण्डित कैलाश , आज चीन के चगुंल में है,

गिरिजा के बम बोला, आज हिमालय बोला। (8)

आखिर उनके द्रबित मन से उन्हे साक्षात बुद्ध की प्रतिमा भी चीन के इस आक्रमण से बोलते दिखाई देती है।

आज ध्यान से मग्न बुद्ध की, प्रतिमा सहसा बोली। (9)

भारत चीन युद्ध के दौरान 'चीन की चुनौती' जैसी वीररस एवं देश भक्ति पूर्ण पुस्तिकाएं तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी ने सैनिको में वितरण करने हेतु भी मंगवाई गई थी।

यह जौहर का देश यहां है. रीत केसरी बाने की,

पूछा करते कब आयेगी, बेला शीश चढाने की? (10)

राजस्थान की रत्नगर्भा धरती को ऐसे राष्ट्र भक्त व्यक्तित्व को जन्म देने पर गर्व है। सेठिया जी की रचनाएं शुष्क हदय में संगीत रूखे मन में भाव पैदा कर सकती है। भावनाओ की अभिव्यक्ति के लिए काव्य से उपयुक्त कुछ नहीं हो सकता इसी कारण सेठिया जी का काव्य मस्तिष्क ही नहीं मन पर भी गहरी छाप छोडता है। हिन्दी में जो कुछ उन्होने लिखा आलोचना की कसौटियो से बार बार खरा उतरा है। न्यूनतम शब्दो में अधिकतम कथ्य यही है।
सेठिया जी की शैली - उनकी एक कविता है

शब्द बन जोड़ूगां, अनाम से कड़ी

पहनूंगा नहीं, नाम की हथकड़ी। (11)

मौन प्रार्थनाएँ/जल्दी पहुंचती है, ईश्वर तक
क्योंकि, मुक्त होती है वे, शब्दों के बोझ से। (12)

ऐसी अनेका अनेक कविताओ में उनका सांस्कृतिक आँचलिक रंग है। 'लीलटांस' के माध्यम से आध्यात्म की जिस ऊँचाई को कवि अभिव्यक्त करती है, लीलटांस क्या है? यह कोई पक्षी है या कोई व्यक्ति है? नहीं! यह तो स्थूल का प्रतीक है। आत्मा का जो उचाईयो का स्पर्श करके सपनो में खोकर अपने परमात्मांश होने की स्मृति जगाकर विश्वात्मा या परमात्मा में लीन होता है ओर सांसारिकता से मुक्त हो जाता है। वे यथार्थ वादी चिन्तक थे उन्होने सत्य को कहां वो वी नए ढंग से। उनका चिन्तन युग बोध के भावो से सलिप्त था। वे समाज को हर मोड़ पर दिशा बोध कराते नजर आते थे।

बलि वासनाओं की दो, नारियल कुंठा का तोडो,
चन्दन अहम का घिसो, बन जायेगा तुम्हारा पशु ही प्रभु। (13)

अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी से वे बहुत अधिक प्रभावित थे। स्वतन्त्रता आन्दोलन में उनके द्वारा भारतीय जनता को जो नेतृत्व मिला उसके लिए उन्होने 'मेरा युग' कविता संग्रह बार बार उस महा पुरूष का वन्दन कर उनके देश हित कार्यो का बखान करते है। वे स्वयं बापू को अपना आदर्श मानकर खादी पहनना, विदेशी वस्त्रो का परित्याग किया। अछूतोद्वार हेतु उन्होने स्वयं अपने घर अछूत को बुलाकर उसके हाथ का बना खाना खाकर समाज के सामने जातिवादी भावना का विरोध किया। वे निरन्तर समाज सेवा में लगे रहे।

जीत रहा है घृणा द्वेष को, दो नयनो का प्यार,
मोम बन गये बापू, तुम को छू कितने पाषाण! (14)

हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्थापित करने के लिए कहां की ''हिन्दी भारत की आत्मा है हिन्दी को उचित स्थान दिये बिना राजनैतिक स्वतन्त्रता का कोई अर्थ नहीं है। भारत के व्यक्तित्व की मौलिकता विश्व तब तक स्वीकार नहीं करेगा जब तक राष्ट्रीय और अन्त्रराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को प्रतिष्ठित नहीं किया जाता। अंग्रेजी मोह छोडे बिना भारत की आवाज को व्यक्त नहीं कर सकेगे हिन्दी जैसी समृद्ध व वैज्ञानिक भाषा निश्चित रूप से महान भारत बनाने में समर्थ है तथा यह हमारी मातृ भाषा एकता के महासागर तक पंहुचाने में समर्थ है''। राष्ट्र भाषा हिन्दी पूरे भारत वर्ष की जन भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो इसके लिए उनका निरन्तर प्रयास रहा। इसी के साथ साथ वे राजस्थानी भाषा को भी संविधान में मान्यता दिलाने के लिए अनवरत परिश्रम करते रहे। उन्हे अपनी राजस्थानी भाषा से बहुत प्रेम था, कई राजस्थानी रचनाओ पर तो कई हिन्दी के लेखक भी हतप्रभ थे। 'धरती धोराँ री ' राजस्थानी कविता तो पूरे देश का कंठहार थी। राजस्थानी राजस्थान के आठ करोड़ निवासियो की भाषा है। फिर भी इसे अन्य भारतीय भाषाओ के समकक्ष सवैधानिक दर्जा नहीं दिया जा रहा है। कई बार इस मांग को लेकर आन्दोलन हुए पर आज भी स्थिति जस की तस है यह सर्वविदित है, कि राजस्थानी समृद्ध भाषा है इसका व्यापक शब्द भण्डार है, व्याकरण है। राजस्थानी भाषा की मान्यता हेतु 'मायड रो हेलो' नामक राजस्थानी भाषा में पुस्तक प्रकाशित की व कवि ने कहा -

देह आतमा ज्यूं धरती रो, भासा स्यूं सम्बन्ध,
आं ने अलघा करणा चावै, बै मूरख मतिमंद! (15)

सांस्कृतिक अवदान - विश्व रामायण मेले के आयोजन हेतु निरन्तर परामर्श मूलक योगदान, श्रीराम के जीवन संदेश को व्यापक स्तर पर पहुचाने हेतु सरकार से आग्रह रामायण मेलो में दक्षिण, पूर्व, एशिया के मुस्लिम एवं बौद्ध राष्ट्रो को भी जोड़ने का सुझाव दिया। हल्दी घाटी रे पावन स्थल का संरक्षण विकास एवं पुनर्निर्माण व्यापक प्रयास सतीप्रथा उन्मूलन हेतु प्रयास किया। महावीर इंटरनेशनल के संरक्षक एवं सचेतक भी रहे। राष्ट्रीय चेतना के माध्यम से सांस्कृतिक बोध को उदबुद्ध करने वाले यशस्वी कवि के रूप में सदैव जाने जायेगे। यू.एस. कांग्रेस आ ॅफ लाइबेरी ने श्री सेठिया जी को बीसवी सदी के महातम कवियो में स्थान दिया है। निग्र्रन्थ पर भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली द्वारा मूर्तिदेवी साहित्य पुरस्कार दिया गया। 'लीलंटास' को साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा राजस्थानी भाषा की सर्वश्रेष्ठ कृति 1976 में राजस्थान सरकार द्वार स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में इस सम्मान सम्मानित किया गया।

छिपा हुआ जो द्वन्द, उसे ही, परमानन्द बनाओ,
बिछुड़ गई जो बूंद, उसे ही, महासमन्द बनाओ। (16)

इन शब्दो में मानव मात्र के कल्याण की भावना से समस्त जाति के मंगल की कामना की गई है। कवि कन्हैया लाल सेठिया ने अपने काव्य के माध्यम से राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चिंतन को एक नई परिभाषा दी। जो उन्हें समकालीन कवियों से एक अलग स्थान प्रदान करता है। भाषा और उसके द्वारा जनमानस के हृदय का स्पंदन उनके काव्य ने जादू की तरह किया जो आज भी उनकी और उनके काव्य की सार्थकता स्पष्ट करता है

निष्कर्ष (Conclusion)

शोध पत्र में पद्मश्री कवि कन्हैयालाल सेठिया के काव्य का सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना में योगदान का सारांश प्रस्तुत किया गया। कन्हैयालाल जी सेठिया के काव्य का हिंदी और राजस्थानी दोनों पृष्ठभूमि पर प्रभाव को बताया गया है। चूंकि कवि सेठिया जी के इस योगदान पर शोध कार्य नगण्य हुआ है अतः विस्तृत शोध अपेक्षित है, जिससे नई पीढ़ी भी लाभान्वित हो सके।

संदर्भ (Reference)

(1) जुगलकिशौर जैथलिया, 2005, "कन्हैयालाल सेठिया समग्र", राजस्थान परिषद , कोलकाता, पृष्ठ 86
(2) जुगलकिशौर जैथलिया, 2006, "कन्हैयालाल सेठिया समग्र", राजस्थान परिषद, कोलकाता, पृष्ठ 56
(3) जुगलकिशौर जैथलिया, 2006, "कन्हैयालाल सेठिया समग्र", राजस्थान परिषद, कोलकाता, पृष्ठ 59
(4) जुगलकिशौर जैथलिया, 2006, "कन्हैयालाल सेठिया समग्र", राजस्थान परिषद, कोलकाता, पृष्ठ 60
(5) जुगलकिशौर जैथलिया, 2005, "कन्हैयालाल सेठिया समग्र", राजस्थान परिषद , कोलकाता, पृष्ठ 76
(6) जुगलकिशौर जैथलिया, 2005, "कन्हैयालाल सेठिया समग्र", राजस्थान परिषद , कोलकाता, पृष्ठ 75
(7) जुगलकिशौर जैथलिया, 2006, "कन्हैयालाल सेठिया समग्र", राजस्थान परिषद, कोलकाता, पृष्ठ 344
(8) जुगलकिशौर जैथलिया, 2006, "कन्हैयालाल सेठिया समग्र", राजस्थान परिषद, कोलकाता, पृष्ठ 329
(9) जुगलकिशौर जैथलिया, 2006, "कन्हैयालाल सेठिया समग्र", राजस्थान परिषद, कोलकाता, पृष्ठ 337
(10) जुगलकिशौर जैथलिया, 2006, "कन्हैयालाल सेठिया समग्र", राजस्थान परिषद, कोलकाता, पृष्ठ 364
(11) जुगलकिशौर जैथलिया, 2006, "कन्हैयालाल सेठिया समग्र", राजस्थान परिषद, कोलकाता, पृष्ठ 579
(12) जुगलकिशौर जैथलिया, 2006, "कन्हैयालाल सेठिया समग्र", राजस्थान परिषद, कोलकाता, पृष्ठ 632
(13) जुगलकिशौर जैथलिया, 2006, "कन्हैयालाल सेठिया समग्र", राजस्थान परिषद, कोलकाता, पृष्ठ 629

(14) जुगलकिशौर जैथलिया, 2006, "कन्हैयालाल सेठिया समग्र", राजस्थान परिषद, कोलकाता, पृष्ठ 142

(15) जुगलकिशौर जैथलिया, 2005, "कन्हैयालाल सेठिया समग्र", राजस्थान परिषद , कोलकाता, पृष्ठ 215

(16) जुगलकिशौर जैथलिया, 2006, "कन्हैयालाल सेठिया समग्र", राजस्थान परिषद, कोलकाता, पृष्ठ 542